International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पतृसत्तात्मक समाज एवं महिलाएँ : भारतीय राजनीति के परिप्रेक्ष्य में

- सोनिका

प्रस्तावना

भारत व वधताओं का देश है, जिसका इतिहास,संस्कृति एवं भाषाएँ इसे वशेष बनाती हैं। इसी संदर्भ में यदि इसके समाज के ढांचे पर गौर कया जाए तो वह भी कुछ खास ही है। भारतीय समाज जो अपने इतिहास में मातृसत्तामक ढांचे के लए जाना जाता था ,आज उसका एक अलग ही स्वरूप नज़र आता है। उस समाज में पतृसत्ता की एक ऐसी जड़ पनप गयी है जिसने महिलाओं को हा शये पर लाकर खड़ा कर दिया है। वे महिलाएँ जो भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन की भागीदार रही हैं, जिसने व्यक्ति के स्वरूप को सवारने में अग्रणी भू मका निभाई है , जिसने इस सभ्य समाज का निर्माण कया जिसमे हम सभी मलकर रहते हैं, उसी समाज में वे आज दर कनार कर दी गयी हैं। जिसका मूल कारण राजनीति में उनकी पछड़ी भागीदारी हैं। राजनीति कसी भी राष्ट्र के मजबूत होने व पछड़े होने में महत्वपूर्ण भू मका निभाती है। राजनीति को हम व भन्न अर्थों में समझ सकते है। साथ ही राजनीति , पतृसत्तात्मक समाज एवं महिलाओं के त्रिकोणीय संबंधो को भी समझना होगा, क कस प्रकार ये एक दूसरे से जुड़े हैं और समाज को प्रभा वत करने का कार्य करते हैं।

यदि हम पतृसत्तात्मक शब्द पर निगाहें डाले तो पाते हैं क सामान्यता ऐसी व्यवस्था जिसमे समाज के प्रमुख स्थान या यूं कह ले "शक्ति केन्द्रों" पर पुरुषों की प्रधानता पाई जाती है व महिलाए गौण भू मका में हैं। इन प्रमुख शक्ति केन्द्रो में हम राजनीतिक पार्टियों में उनकी सदस्यता ,राजनीतिक नेतृत्व अथवा प्रतिनि धत्व, नैतिक अ धकारिता, सामाजिक संबंध, संपत्ति नियंत्रण आदि को देख सकते हैं। यहीं पर यह प्रश्न उभरकर आता है क क्यों इन शक्ति केन्द्रो पर पुरुषों की प्रधानता दिखाई देती है और महिलाएं पछड़ी हुई नज़र आती हैं ? इस लेख में हम इसी प्रकार के प्रश्नो को हल करने का प्रयास करेंगे ।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

इस लेख में हम पतृसत्तात्मक समाज, महिलाओं के मुद्दे और राजनीति के जटिल संबंधो पर चर्चा करेंगे। इसके साथ ही पतृसत्तात्मक समाज के कारण राजनीति में उत्पन्न होने वाली

परिसति थयों पर भी गौर करने की जरूरत है। जिस कारण से महिलाए राजनीति के दूसरे पायदान पर खड़ी हुई हैं।

पतृसत्तामक समाज एवं महिलाएं

पतृसत्ता को सरल शब्दों में कहे तो समाज का ऐसा ताना- बाना है जो पुरषो को महिलाओं से केवल पुरुष होने के कारण ज्यादा अ धकार देने की कवायद करते हैं। वे महिलाओं से अ धक अ धकार पाने के हकदार हैं क्यों क वे लंग के आधार पर पुरुष जाति से संबंध रखते हैं। जिसका सीधा सा नाता जेंडर से जुड़ा हुआ है। इस पतृसत्ता का लंग से नहीं अ पतु जेंडर से रिश्ता है। इसे समझने के लए हमे लंग **(sex)** व जेंडर के भेद को समझना होगा। " लंग" एक जै वक शब्दावली है, जो क नारी व पुरुषों की शारीरिक बनावट से जुड़ी हुई है ,जिसका संबंध नारी व पुरुष के उस ढांचे से है जिसे प्रकृति ने बनाया है। वही जेंडर एक सांस्कृतिक शब्दावली है जो क नारी व पुरुष पर समाज द्वारा थोप गयी है क नारी , नारी होने के कारण उन सभी व्यवहारों को करेगी , जो समाज ने उसके लए तय कए हैं। वह उन बंधनो में बंधी रहेगी जैसे नारी सभी घरेलू कार्य ही करेगी जब क पुरुष मु खया बनकर सार्वजनिक जीवन को भोग सकेगा। जेंडर द्वारा महिलाओं पर उनके व्यवहार ,मान सक,शारीरिक, भावनात्मक आदि पक्षों पर नियंत्रण कया जाता है। साथ ही महिलाओं को पुरुषों के अनुरूप कार्य करने व अपे क्षत व्यवहार के लए बाध्य कया जाता है। इस प्रकार देखे तो जेंडर व लंग दो अलग अलग अवधारणाएँ है। जिसका प्रयोग कर पुरुष समाज , राजनीति का स्वामी बन बैठा है , जब क महिलाएं सहायक होकर भी मुख्य भू मका प्राप्त करने से वं चत है। यहाँ एक बात स्पष्ट करनी आवश्यक है क जब लंग के साथ स्त्रीत्व व पुरुषत्व गुणो को जोड़ा जाता है तो जेंडर का उद्भव देखने को मलता है। साधारणतया नाज़ुक ,कोमल, भावुक,संवेदनशील,घर-परिवार,बच्चों की देखभाल, घर के काम काज, सलाई,बुनाई इत्यादि स्त्रीत्व के गुण बताये जाते हैं , जब क मजबूती ,गुस्सा,बाहर के कार्य जैसे नौकरी ,राजनीति, शक्षा, संपत्ति

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

लेनदेन, बैं कंग इत्यादि पुरुषत्व के गुण बतलाए जाते हैं। समाज मे घरेलू कार्यों को करना व सार्वजनिक कार्यों को करना तक को जेंडर से जोड़ा गया है। जेंडर का स्वरूप इतना जटिल है क इसका चक्र तोड़ना ही कठिन कार्य है। यह कठिनाई केवल महिलाओं के लए ही नहीं है बल्कि पुरुषों के लए भी है। उदाहरण के लए यदि कोई नारी हिममतपूर्ण कार्य करती है तो उसे कहा जाएगा, क "वाह! क्या मर्दो क तरह बहादुरी दिखाई है" या कोई पुरुष अपने नम्र स्वभाव के कारण रोता है तो उसे "ज़नानी की तरह रोता है" कहा जाता है। अब यहाँ पर ध्यान देने वाली बात यह है क "हिम्मत" केवल पुरुषों का ही स्वभाव होना अनिवार्य है ? क्या कोई स्त्री इन गुणो क धनी नहीं हो सकती ? वही क्या पुरुष रो नहीं सकते ? "रोना" क्या केवल महिलाओं का ही गुण है ? जब क इतिहास में देखे तो हम पाते है क "रानी लक्ष्मीबाई" जैसी महिलाए हुई हैं जिनकी हिम्मत व साहस का नजारा पूरे वश्व ने देखा है। वही दूसरी और गांधीजी सवेदनशील स्वभाव के थे। अत: यह तो स्पष्ट है क नारी व पुरुषो में समान गुण पाये जाते है जो क जेंडर के कारण समाज में एक गलत ढांचे को जन्म देते हैं , जिसे हम पतृसत्तात्मक समाज कह सकते हैं। जिसमे समाज के व भन्न भागो पर पुरुष अपना अ धकार जमा लेता है। इस प्रकार समाज में एक पतृसत्तात्मक समाज का निर्माण होता है। जिसमे पुरुषो को प्रभुत्वशाली दर्जा मला हुआ है।

राजनीति एवं महिलाएं

भारत में महिलाएं व राजनीति दोनों ही ऐसे वषय हैं जिनकी चर्चा करते तो सभी लोग हैं कन्तु उसकी संकल्पना ,पक्ष,समस्या व समाधान पर कम ही लोग गौर फरमाते है। राजनीति एक ऐसा ज्वलंत वषय माना जाता है जिससे महिलाओं को दूर रहने की सलाह दी जाती है। यदि हम ध्यान से देखे तो यहाँ एक अलग ही पहलू निकलकर सामने आता है। राजनीति जिसे प्रमुखत: शक्ति का केंद्र माना जाता है , उससे सदैव महिलाओं को अलग करने की प्रवृति पाई जाती है। राजनीति में भागीदारी तो दूर का वषय है, वे तो मतदाता के रूप में भी स्वयं को स्वतंत्र नहीं पाती। हाल ही मे जारी एक रिपोर्ट "लोकनीति"(**CSDS- center for the study of developing societies)** व **(German foundation Konrad Adenauer Stiftung-KAS)** के अनुसार प्रत्येक तीन महिलाओं में से दो महिलाओं का यह मानना है की वे स्वयं को राजनीतिक रूप से स्वतंत्र नहीं पाती। दस में से केवल महिला ही यह कहती है क वह राजनीतिक रूप से स्वतंत्र है , अन्यथा सभी यह कहती हैं

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

क वे अपने राजनीतिक मत का प्रयोग अपने पति , घर के मु खया के कहे अनुसार ही करती हैं। वे राजनीतिक दलों के प्रति अपने व्यवहार व्यक्त करने को भी स्वतंत्र नहीं हैं। पहली बात तो यह की महिलाओं की सोच को केवल वोट देने तक ही सी मत रखा गया है। कन्तु यदि कोई महिला इस वोट देने के अ धकार से आगे बढ़कर दलों की भू मका ,उसके नकारात्मक या सकारात्मक पहलुओं पर बात करती है तो उसे तुरंत ही चुप करा दिया जाता है। उसे इस बात का हवाला दिया जाता है क तुम राजनीतिक दलों के बारे में क्या जानती हो ? अपने घरेलू कामो पर ध्यान देना ही तुम्हारे लए उ चत है। राजनीति तुम्हारे काम का वषय नहीं है। इस प्रकार क दलीले महिलाओं को मतदाता के रूप मे भी संकु चत स्थान देती है। चाहे राजनीतिक भागीदारी की बात हो , वोट देने की अथवा राजनीति में अपना योगदान देने की महिलाओं को बहुत सारी समस्याएँ जकड़ लेती हैं। वे इन मामलों में स्वयं निर्णय लेने हेतु स्वतंत्र नहीं हैं। जब महिलाए राजनीतिक भागीदारी की बात करती हैं तो पुरुष समाज उन्हे राजनीति को "गंदा खेल" बताकर पीछे हटने की बात रखता है। वहीं जब स्वेछा से कसी दल को वोट देने की बात आती है तो राजनीति में कम समझ होने का हवाला दिया जाता है। क्यों क जब जब राजनीति में महिलाओं ने भाग लया है तभी उन्होने अपने बौ द्धक , ता र्कक, निर्णय निर्माणकारी होने का परिचय दिया है। उदाहरणस्वरूप इन्दिरा गांधी (पूर्व प्रधानमंत्री), सुषमा स्वराज (पूर्व वदेश मंत्री), मीरा कुमार (पूर्व लोकसभा स्पीकर), निर्मला सीतारमन (वर्तमान वत्त मंत्री) इत्यादि को देखा जा सकता है। ऐसे उदाहरण पतृसत्तात्मक समाज पर कडा प्रहार करते हैं, जिस से पुरुष का अंधा गौरव नष्ट हो जाता है। यहाँ यदि हम सं वधान के प्रावधानों की बात करें तो स्पष्ट होता है क महिलाएं भी राजनीतिक प्र क्रया का अ भन्न अंग है । जब क प्राचीन समाजो को देखें जिसमे ग्रीक वशेष हैं उसमे भी राजनीति वज्ञान के जनक व उनके गुरुओं के वचार भी महिला वरोधी ही नज़र आते हैं। प्लेटो व अरस्तू के बिना राजनीति वज्ञान का ज्ञान अधूरा ही माना जाता है,उनके वचार भी पतृसत्तात्मक समाज के पक्ष में ही नज़र आते है। प्लेटो ने महिलाओं को एक ओर जहां राजनीति व दार्शनिक राजा बनने क श्रेणी में रखा , कन्तु फर भी महिलाओं को अ धक राजनीतिक शक्ति योग्य नहीं माना। वहीं दूसरी ओर अरस्तू ने तो महिलाओं को बु द्धहीन करार दिया है। बताइये, जिस राजनीति में महिलाओं की भागीदारी की बात क जा रही है उसके प्रमुख वचारक ही महिलाओं को इस बात योग्य नहीं मानते क महिलाएं शासन कर सकती हैं। इसके चंतन में महिला पक्षपात के स्वर नज़र आ रहे हैं। जब क भारतीय इतिहास एवं चंतन में

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

फर भी कुछ लचीलापन पाया गया है , जो की नाम से ही सही परंतु महिला भागीदारी की बात तो करते नज़र आते हैं। वही वर्तमान के सन्दर्भ में देखे तो स्थितियों में परिवर्तन आया है। पश्चिमी देशो में महिलाओं की भागीदारी में वृ द्ध हुई है जब क भारतीय राजनीति में महिलाओं की इतनी भागीदारी देखने को नहीं मली है और यदि मली भी है तो उसका एक अलग ही स्वरूप देखने को मला है , जिसमे महिलाए केवल नाम की प्रतिनि धतव्कर्ता हैं , व्यावहारिक रूप में में उनके पति,भाई, पता,चाचा इत्यादि ही कार्य करते हैं। यदि कम शब्दों में बात कहे तो ये कहा जा सकता है क इसका मूल कारण पतृसत्तात्मक समाज एवं पुरुष प्रधान चंतन है। जिसमे पुरुषों को श्रेष्ठता का पात्र समझा जाता है, वही महिलाएं आधीनों की श्रेणी में गनी जाती हैं और कसी अंधेरे कोने में खड़ी नज़र आती है।

महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनि धत्व में बाधाएँ

जैसा की हम ऊपर भी इस बारे में चर्चा कर चुके हैं क महिलाए कसी भी स्वरूप में पुरुषों से कम नहीं है, कन्तु उसके बाद जब राजनीतिक प्रतिनि धत्व को देखे तो महिलाओं की उपस्थिती ना के बराबर है । परंतु ऐसा क्यों हो हो रहा है ? जब महिलाएं क्षमताओं में पुरुषों के बराबर हैं तो राजनीतिक पटल पर बराबरी क्यों देखने को नहीं मलती ? यहाँ पर वचार वमर्श क खास आवश्यकता है । आइये उन मुद्दो या बाधाओं पर गौर करते हैं जो महिलाओं को राजनीति में प्रमुख भागीदारी बढ़ाने से रोकते है।

- पतृसत्तात्मक समाज : भारतीय समाज का पुरुषों को श्रेष्ठ व महिलाओं को कमतर समझने वाला रवैया उनकी राजनीतिक भागीदारी को वशेष रूप से प्रभा वत करता है। महिलाओं को घर में ही निर्णय निर्माण नहीं करने दिया जाता,फलस्वरूप इसी बात को शस्त्र बनाकर उनके खलाफ ही इस्तेमाल कया जाता है। जिस कारण से वे राजनीति के क्षेत्र में उतना खुलकर प्रदर्शन करने में नाकाम रही हैं।
- घरेलू जिम्मेदारियाँ : पतृसत्ता क गहरी जड़ें इस प्रकार पनपी है क उन्होने महिलाओं को केवल घर तक ही सी मत कर दिया है। महिलाओं को घर परिवार क देखभाल , बच्चे, घरेलू काम काज इत्यादि से इतना लाद दिया है क वह इनसे बाहर आकर काम करने सोच ही नहीं पाती।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

- व्यक्तिगत बाधाएँ अथवा सांस्कृतिक बाधाएँ: महिलाओं को महिला बनाने वाले सांस्कृतिक चक्र ने इस प्रकार घेरा है क वह चाहकर भी इन सीमाओं को लांघने में नाकामयाब होती है। जैसे समाज में पर्दा प्रथा , महिलाओं का अन्य पुरुषों से ना बात करना , चौपाल ना जाना इत्यादि ऐसी बातें हैं जिन्हे समाज द्वारा "अच्छी महिला" या "सुसभ्य महिला" मानने को ववश है। महिलाओं के मस्तिष्क में इस प्रकार क अवधारनाएं पैदा क गयी है , जिसके चलते वह अपने इस राजनीतिक पछड़ेपन को खुशी के साथ स्वीकार करती है।
- आ र्थक स्थिति का मजबूत न होना : वर्तमान भारतीय राजनीति में धनाढ्योन का ही बोलबाला है। उसमे यदि महिलाओं क आ र्थक स्थिति के बारे में बात करे तो वह ज्यादा अच्छी नहीं है। महिलाएं गरीबों में भी सबे गरीब है। अगर उनके श्रम व कार्य क बात करे तो वह तो बहुत है कन्तु उसकी अवज में उन्हे कुछ नहीं मलता। उनके द्वारा कए घरेलू कार्यों को **GDP** में नहीं गना जाता। वे पैसों के लए पति पर निर्भर करती हैं। अब जो महिलाएं अपनी दैनिक जरूरतों को पूरा करने के लए पति या परिवार के अन्य पुरुष सदस्यों पर निर्भर होगी वे राजनीतिक भागीदारी हेतु कस प्रकार आवाज़ बुलंद कर सकेंगी। अत: आ र्थक रूप से पुरुषों के अधीनता का पक्ष उनकी राजनीतिक भागीदारी को कम करता है।
- राजनीति का नकारात्मक स्वरूप : जिस राजनीति को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शक्ति का केंद्र माना जाता है, उसे भारतीय राजनीति में पुरुषों के लए सुर क्षत रखा गया है। क्यों क भारत में राजनीति को एक "गंदा खेल" समझा जाता है। जिसमे पुरुष तो भागीदार हो सकते हैं परंतु महिलाए नहीं हो सकती। राजनीति जो की देश की बागडोर संभालने का एक महत्वपूर्ण मंच है, उस से महिलाओं को ये कहकर उतार दिया गया है की यह तुम्हारे लए नहीं है। राजनीति में बढ़ता अपरा धकरण , भ्रष्टाचार इसके नकारात्मक पहलू को दिखाता है। जो की पतृसत्तात्मक सोच के कारण केवल महिलाओं के लए ही घातक हैं ना की पुरुषों के लए। इस तरह का दोहरा रवैया महिलाओं के प्रतिनि धत्व को कम करने का काम करता है।

इस प्रकार हम देख सकते हैं की व भन्न बाधाएँ हैं जो महिलाओं के राजनीतिक भागीदारी को कम करने का काम करती है। इसके अलावा अक्सर जाति , वर्ग एवं परिवार की राजनीतिक पृष्ठभू म भी महिलाओं की भागीदारी को प्रभा वत करती करती हैं। अक्सर देखा जाता है की नीची जाति की महिलाएं ज्यादा मुखर होती हैं, कन्तु गरीबी व अ शक्षा के कारण राजनीति का अंग नहीं बन पाती।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

दूसरी ओर उच्च जाति की महिलाएं श क्षत एवं आ र्थक रूप से सबल तो होती हैं परंतु उनके निर्णय परिवारजन ही लेते हैं। स्वतन्त्रता की कमी , निर्णय निर्माण की कमी महिलाओं की पैरो की जंजीर हैं, जिनके बंधन पहले की अपेक्षा कम तो हुये हैं, कन्तु खत्म नहीं हुये।

महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनि धत्व को बढ़ाने के उपाय

अब इन बाधाओं को कस प्रकार से कम कया जा सकता है , उन बिन्दुओं पर चर्चा करने की जरूरत है। क्यों क महिलाएं मानव जीवन की निर्माणाधार हैं और राजनीति उस जीवन को सभ्य , वकासशील एवं गरिमापूर्ण बनाने का एक जरिया है। इस लए महिलाओं की भागीदारी राजनीति में होना अनिवार्य है। राजनीति में महिलाओं की भागीदारी कम होने का कारण हम देख चुके है। यदि हम महिलाओं के राजनैतिक प्रतिनि धत्व में बढ़ोतरी चाहते हैं तो हमें पतृसत्तात्मक समाज पर करारी चोट करनी होगी। उन्हे राजनीति की शक्ति व महत्व से परि चत करवाना होगा , जिससे वे अभी तक काफी हद तक अन भज्ञ है , ऐसा नहीं है क महिलाएं राजनीति में हैं ही नहीं , कन्तु ये अवश्य है क उनकी संख्या बहुत ज्यादा कम है। इस पतृसत्तात्मक समाज के बंधनो को तोड़ने के लए महिलाओं को और अ धक श क्षत करना होगा, ता क वे अपने अ धकारों से अवगत हो सके व अपनी भू मका का निर्वहन कर सके। महिलाओं के चारों ओर एक ऐसी चारदीवारी देखने को मलती है,जिसके पार वे झांक ही नाती पाती , जब क राजनैतिक भागीदारी के लए राजनीति की इस नकारात्मक अवधारणा की संकल्पना को बदलना होगा। महिलाओं को राजनीति के वास्त वक स्वरूप से परि चत करना होगा। जिसमे वे ये जान सके क राजनीति समाज की , शक्ति की धुरी है, जिस पर पुरुषों एवं महिलाओं दोनों का बराबरी का हक है। जो क समाज में सकारात्मकता लाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

इसके अलावा महिलाओं को सौंपी गयी घरेलू जिम्मेदारियों को पुरुष व महिला दोनों के मध्य साझा करना होगा ता क महिलाएं केवल घर परिवार तक सी मत न रहकर अपने राजनैतिक दायित्वों को निभा सके। बच्चे का पालन-पोषण,साफ-सफाई, भोजन पकाना इत्यादि सभी कामों में पुरुषों की सहभा गता महिलाओं को राजनीति में प्रतिनि धत्व करने को प्रोत्साहित

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

करेगी। साथ ही समाज से सामाजिक बुराइया जैसे- पर्दा प्रथा, रूढ़िवादिता (**stereotype**) इत्यादि को भी समाज से दूर करना होगा , ता क वे खुलकर समाज एवं राजनीति में भागीदार बन सके। महिलाओं का आ र्थक रूप से मजबूत होना उनके राजनीति में भागीदार होने को सुनिश्चित करता है। यदि हम वर्तमान में महिलाओं की भागीदारी को देखें पाते हैं क वही महिलाएं राजनीति में ज्यादा भागीदार हैं जो या तो आ र्थक रूप से सम्पन्न हैं या जिनकी राजनीतिक पृष्ठभू म पायी जाती है। उन महिलाओं का प्रतिनि धत्व ना के बराबर है जो माध्यम वर्ग से ताल्लुक रखती हैं या गरीब तबके से। राजनीतिक प्रतिनि धत्व को सुनिश्चित करने हेतु महिलाओं को आ र्थक रूप से सबल बनाने की बहुत आवश्यकता है , जिससे वे निर्णय निर्माण कर राजनीति की तरफ उन्मुख हो सकें।

निष्कर्ष

भारतीय राजनीति में महिलाओं क भागीदारी व पतृसत्तात्मक समाज पर चर्चा करने के पश्चात इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है क पुरुष प्रधान समाज व इसके दायरे महिलाओं के र्राजनीतिक प्रतिनि धत्व को गंभीर रूप से प्रभा वत करता है। जिसकी वजह से महिलाओं क राजनीतिक भू मका में काफी कमी आती है। पतृसत्तात्मक समाज को प्रगति के लए अपने इस रूढ़िवादी ढांचे को बदलना होगा, इस परिवर्तन के बिना समाज एवं राजनीति में महिलाएं वो भू मका निभा ही नहीं सकती जिसकी वे हकदार हैं। इन खोखले व नकली बंधनो को समाप्त करने क बहुत जरूरत है ता क राजनीति के इस मंच पर महिलाए अपनी मजबूत व दमदार प्रस्तुति कर सकें।

अंततः यह कहा जा सकता है क महिलाओं को समाज में परिवर्तन करके राजनीति में अपनी भू मका बढ़नी होगी व पतृसत्तात्मक समाज को जड़ से आफेंकना होगा व ऐसे समाज का निर्माण करना होगा जो क दोनों के लए समान हो और यह सब राजनीतिक भागीदारी से ही संभव है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संदर्भ-ग्रंथसूची

1. **Simone de Beauvior, "The Second Sex", Picador- 1988- Part-I Pp 35-91.**
2. **Alison Jaggar, "Feminist Politics and Human Nature", Roman and Allanheld Sussex 198- Pp 98-99,106-113,125-133.**
3. **Gerda Lerner, "Creation of Patriarchy", New York, Oxford University Press,1986.**
4. **Chakravarty, Uma, "Contextualizing Brahminical Patriarchy ; Gender, Caste, Class and State", Economic and Political Weekly, 28:14,April 3,1993.**
5. **Mathur, Kanchan, "Body as a space, body as site: Bodily Integrity and Women's empowerment in India", Economic and Political Weekly, April 26, 2008.**
6. **"Patriarchal struggles and State Practices : A Feminist, Political-Economic View" Vol.12, No.5 (Oct,1998), pp.505-527. Sage Publications.**